कैम्पस कनेक्ट

राम लाल आनंद महाविद्यालय का मासिक ई-न्यूज़लेटर

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का प्रकाशन | नई दिल्ली, दिसम्बर 2025 | वर्ष 3, अंक 26, पृष्ठ 4





रामलाल आनंद महाविद्यालय में इतिहास विभाग के दो दिवसीय सेमिनार में उपस्थित शिक्षक और प्रतिभागी (बाएं), प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने उद्घाटन सत्र को संबोधित किया (दाएं)।

रामलाल आनंद महाविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय यूथ हिस्टोरियन कॉन्फ्रेंस का आयोजन

सत्य पर आधारित होना चाहिए इतिहास

श्वेता सिंह

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय ने इतिहास को नई दृष्टि और भारतीयता से जुड़े सवालों को नए आयाम देने के लिए दो दिवसीय राष्ट्रीय यूथ हिस्टोरियन कॉन्फ्रेंस का मंच सजाया, जिसमें देश भर से आए इतिहासकारों और विद्वानों ने संवाद किया। 'रिवाइजिंग इंडियन नेशनलिस्ट हिस्ट्रीग्राफी' थीम पर केंद्रित दो दिवसीय सम्मेलन की शुरुआत 8 अक्टूबर को डॉ. प्रतीक कुमार के विषय की महत्ता और सम्मेलन की रूपरेखा सामने रखने से हुई। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. बालमुकुंद पांडे, प्रो. हिमांशु कुमार चतुर्वेदी, प्रो. हीरामन तिवारी और महाविद्यालय के चेयरमैन डॉ. जिगर इनामदार मौजूद रहे।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि भारत की इतिहास परंपरा, कला और दर्शन इसे भरी रही है, लेकिन यूरोपियनों ने अपने साम्राज्यवादी दृष्टिकोण से इसे दबाने की कोशिश की। यूरोपीय इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास को कमतर आंका। ब्रिटिश औपनिवेशिक मानसिकता ने हमारे ऐतिहासिक गौरव को सही रूप में दुनिया के सामने आने ही नहीं दिया। मुख्य अतिथि डॉ. बालमुकुंद पांडे ने कहा कि मुगल काल और अंग्रेजी सत्ता से पैदा हुई ऐतिहासिक चुनौतियों को वर्तमान में भरने की जरूरत है। भारत

- **विचार और प्रामाणिकता से बनता है इतिहास : डॉ जिगर इनामदार**
- **अंग्रेजी नीति का भारतीय संस्कृति पर रहा है गहरा असर : डॉ. बालमुकुंद पांडे**

में संस्कृति और परंपरा का शोषण स्वतंत्रता के बाद और अधिक हुआ है। अंग्रेजों की 'एंपावरमेंट, अंग्रेजी, एजुकेशन' नीति ने हमारी संस्कृति पर गहरा असर डाला है।

चेयरमैन डॉ. जिगर इनामदार ने कहा कि इतिहास भावनाओं पर नहीं, सत्य पर आधारित होना चाहिए। इतिहास के साथ अन्याय हुआ है, विशेषकर भारतीय इतिहास के साथ। उसे ठीक करने के प्रयास में हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कहीं हम वही गलती न दोहरा दें जो पहले ब्रिटिश या यूरोपीय इतिहासकारों ने की थी। इतिहास कभी भावनाओं के आधार पर नहीं लिखा जाता। उसका आधार हमेशा सत्य और प्रामाणिकता का होना चाहिए। प्रो. हिमांशु कुमार चतुर्वेदी ने अपने वक्तव्य में कहा कि हिस्ट्री इस द सॉल ऑफ नेशन। भारत के इतिहास को टुकड़ों में बांट कर प्रस्तुत किया गया। इसे कभी समग्र रूप में पढ़ने का अवसर नहीं मिला। इतिहास में भावना से अधिक सोच, प्रामाणिकता और तर्क का महत्व है। युवा, सत्य एवं प्रमाण आधारित अध्ययन अपनाएं। सम्मेलन के विभिन्न सत्रों में स्वदेशी दृष्टिकोण, ऐतिहासिक पुरोधाओं के योगदान और इतिहास के पुनर्लेखन जैसे विषयों पर शोध पत्र प्रस्तुत किए गए।

प्रो. हीरामन तिवारी ने कहा कि हर अतीत स्मृतियों में समाया होता है। स्मृतियों के बिना इतिहास संभव नहीं है। उन्होंने बताया कि पश्चिम में अतीत की स्मृति का महत्व बढ़ा है, लेकिन भारत में आज भी इतिहास का मूल उस स्मृति में है, जिससे हम सब जुड़े हैं। कॉन्फ्रेंस में इतिहास विभाग के प्रो. राकेश कुमार, प्रो. नरेन्द्र पाण्डे, प्रो. राजीव कुमार, डॉ. कृष्ण गोपाल त्यागी, डॉ. शची मीणा, डॉ. विकास कुमार, डॉ. अरविन्द पटेल सहित कई शिक्षक, शोधार्थी और विद्यार्थी मौजूद रहे। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. प्रतीक कुमार ने किया।

हमें अपने सपने पूरे करने चाहिए

भारती बल

नई दिल्ली। मुझे अपने देश से अथाह प्रेम है। साथ ही मुझे बचपन से बंदूक चलाना पसंद था। इसलिए मैंने भारतीय सेना ज्वॉइन की। यह बात मुख्य अतिथि के रूप में रिटायर्ड कर्नल डॉ. दिवाकर पद्म कुमार पिल्लै ने 16 अक्टूबर 2025 को राम लाल आनंद महाविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग की समिति स्टेटक्राफ्ट की ओर से आयोजित कार्यक्रम लाइफ लेसन फ्रोम एन आर्मी वेटरन के दौरान कही। उन्होंने कहा कि भारत एक ऐसा देश है, जहां सभी नागरिकों को समान अधिकार प्राप्त हैं। उसका वह उपयोग करते हैं। यही हमारे देश की सबसे बड़ी ताकत है।

इन्हीं अधिकारों के साथ हमें अपने सपने पूरे करने चाहिए। इस कार्यक्रम में डॉ. दिवाकर पद्म कुमार पिल्लै की वीडियो दिखाई गई। वीडियो में उनके जीवन की संपूर्ण यात्रा के बारे में विस्तार से बताया गया था। इस दौरान डॉ. जतिन कुमार ने टोकन ऑफ रिस्पेक्ट के साथ उनका सत्कार किया। इस दौरान स्टेटक्राफ्ट समिति के शिक्षक प्रभारी डॉ. निधि यादव, संयोजक डॉ. कप्तान सहित अन्य शिक्षक पदाधिकारी, सदस्य और बडी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।



महाविद्यालय के सूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग के शिक्षकों और विद्यार्थियो के साथ एलुमनाइ युगांश गुप्ता।

भविष्य देख वर्तमान का निर्णय लें

नंदनी वार्ष्णेय

नई दिल्ली। जिंदगी ने कई मोड़ लिए हैं। मैं वापस भारत लौट आया हूं। भविष्य को ध्यान में रखकर वर्तमान के निर्णय लेने चाहिए। यह बात राम लाल आनंद महाविद्यालय के सूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग की एलुमनाइ वार्ता में 7 अक्टूबर 2025 को युगांश गुप्ता ने कही। युगांश महाविद्यालय के सूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग के छात्र रहे हैं। उन्होंने 2022 में अपनी स्नातक की पढ़ाई पूरी की थी। आगे की पढ़ाई के लिए वह विदेश चले गए।

सूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग की एलुमनाइ वार्ता में योगेश गुप्ता ने अपने जीवन के संघर्ष और अनुभवों को साझा करते हुए बताया कि उनका रुझान विज्ञान से मार्केटिंग की ओर बढ़ गया था। मैंने यहां से स्नातक करने के बाद आगे की पढ़ाई फ्रांस और जर्मनी से की। साथ ही उन्होंने राम लाल आनंद महाविद्यालय मे बिताए गए अपने पुराने दिनों को भी याद किया।

एक विद्यार्थी के प्रश्न का उत्तर देते हुए युगांश ने बताया कि पेरिस कहीं न कहीं भारत की राजधानी नई दिल्ली जैसा है। राजधानी होने के कारण पेरिस कॉर्पोरेट सेक्टर, पर्यटन और रोजगार का केंद्र है। फ्रांस के दूसरे हिस्से उससे और भी ज्यादा खूबसूरत हैं। उन्होंने ड्रॉप नहीं लिया और विद्यार्थियों को सलाह दी कि भविष्य को ध्यान में रखकर ही वर्तमान के निर्णय लेने चाहिए। इस दौरान सूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग की शिक्षिका डॉ. सुनीला हुड्डा, डॉ. शालिनी स्वामी, प्रो. वंदना गुप्ता, डॉ. एम सलोमी जॉन और डॉ. निधि एस चंद्रा मौजूद रहीं। छात्रा अंकिता ने मंच संचालन की भूमिका निभाई। बड़ी संख्या में विद्यार्थी एलुमनाइ वार्ता का हिस्सा बने।

शिक्षा की आत्मा है शैक्षणिक ईमानदारी

माही

नई दिल्ली। शैक्षणिक ईमानदारी किसी भी शिक्षा प्रणाली की आत्मा है। विद्यार्थी साहित्यिक चोरी और अनुशासनहीनता से बचें। ऐसा करने से वास्तविक ज्ञान का विकास असंभव है। यह बात रामलाल आनंद महाविद्यालय के गणित विभाग की समिति इन्फिनिटी की 3 अक्टूबर 2025 को आयोजित संगोष्ठी में भारतीय पुस्तकालय संघ के अध्यक्ष प्रो. प्रदीप राय ने कही।

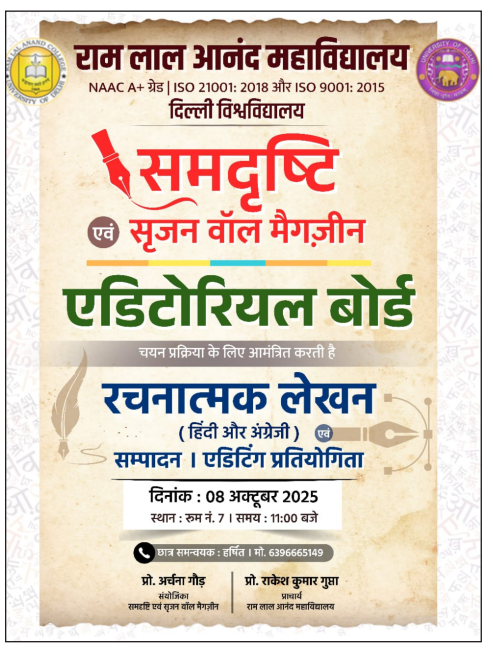
संगोष्ठी का विषय 'शैक्षणिक कदाचार और साहित्यिक चोरी के मुद्दे और चुनौतियां' रखा गया था। इस विषय पर प्रो. प्रदीप राय ने विस्तार से बातें रखते हुए कहा कि विद्यार्थी हमेशा सीखने की ओर ध्यान दें। सीखने की ओर उनका ध्यान रहेगा तो उनके अंदर विचार पनपेंगे और विचार पनपने से आपकी लेखनी परिपक्व होती जाएगी। इस कार्यक्रम के दौरान गणित विभाग के अध्यक्ष डॉ. पवन कुमार शर्मा, समिति के संयोजक डॉ. हेमंत भारद्वाज सहित कई शिक्षक, समिति के पदाधिकारी, सदस्य और बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

लेखन प्रतियोगिता से परखी रचनात्मकता

भारती

नई दिल्ली। अभिव्यक्ति और लेखन की क्षमता को परखने के उद्देश्य से राम लाल आनंद महाविद्यालय में समदृष्टि और सृजन वॉल मैगजीन कमेटी ने संपादन एवं रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता का आठ अक्टूबर 2025 को एक आयोजन किया। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने भाषा और रचनात्मक सोच का प्रदर्शन किया। यह प्रतियोगिता दो चरणों में संपन्न कराई गई।

पहले चरण में प्रतिभागियों को एक रिपोर्ट दी गई, जिसमें भाषा और व्याकरण से जुड़ी गलतियां थीं, जिन्हें सुधारना था। दूसरे चरण में रचनात्मक लेखन टीम से जुड़ने के इच्छुक विद्यार्थियों को मौके पर विषय दिए गए। उनमें से किसी एक विषय पर लेख, कहानी, कविता आदि लिखना था। यह प्रतियोगिता हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में आयोजित की गई थी, ताकि हर विद्यार्थी सहज भाषा में भाग ले सके। प्रतियोगिता चयन के साथ-साथ लेखन के लिए भी थी। आयोजन में कमेटी की संयोजिका प्रोफेसर अर्चना गौड़ मौजूद रहीं।



खेल में बदलाव को समझिए

पत्रकारिता का दायित्व केवल घटनाओं की सूचना देना नहीं होता। समय के साथ उभरते सामजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी परिवर्तनों को पहचान कर समाज के सामने सही संदर्भ में प्रस्तुत करना भी होता है। आज ऐसा ही एक परिवर्तन हमारे सामने ई–स्पोर्ट्स के रूप में है। प्रश्न यह नहीं कि ई–स्पोर्ट्स खेल है या नहीं। बात यह है कि क्या पत्रकारिता इसे गंभीरता से ले रही है? डिजिटल युग में पली–बढ़ी पीढ़ी के लिए मोबाइल और कंप्यूटर स्क्रीन केवल मनोरंजन के साधन नहीं है। वह अभिव्यक्ति, प्रतिस्पर्धा और कॅरिअर के नए मंच बन चुके हैं। ई–स्पोर्ट्स इसी बदलाव का परिणाम है, लेकिन मुख्यधारा



अंकेश स्वर्ण

की पत्रकारिता इसे गेम खेलने का शौक कहकर खारिज करती रही है। ई–स्पोर्ट्स को महज एक ट्रेंड मानना भूल होगी। आज दुनिया भर में ई–स्पोर्ट्स टूर्नामेंट्स हो रहे हैं। करोड़ों लोग लाइव देख रहे हैं। खिलाड़ी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान बना रहे हैं। कंपनियां और संस्थाएं बड़ी राशि निवेश कर रही हैं। भारत में भी यह क्षेत्र तेजी से विस्तार कर रहा है। इसके बावजूद मीडिया कवरेज अब भी नाम मात्र का होता है। जब किसी खिलाड़ी की जीत होती है तो उसे इंटरनेट सनसनी बना दिया जाता है।

सवाल यह नहीं कि ई–स्पोर्ट्स टिकेगा या नहीं। प्रश्न यह है कि पत्रकारिता उसके साथ कदम मिला पाएगी या नहीं। यदि पत्रकारिता ने समय रहते इस बदलाव को समझ लिया तो युवाओं से जुड़ने का माध्यम बनेगा। पत्रकारिता को भी नया जीवन देगा। यदि इसे हल्के में लिया गया तो यह एक और अवसर होगा जो हाथ से निकल जाएगा। ई–स्पोर्ट्स केवल एक डिजिटल खेल नहीं बल्कि बदलते समाज का आईना है। पत्रकारिता का काम आईना दिखाना ही नहीं बल्कि उसमें दिख रहे सच की व्याख्या करना भी है। इसी आशा के साथ 'कैम्पस कनेक्ट' का यह अंक आपके लिए हाजिर है।

संतोष दीक्षित को सेतु का सर्वश्रेष्ठ पांडुलिपि पुरस्कार

अरविन्द सिंह

- 'छाया सच' उपन्यास के लिए किए गए सम्मानित
- जीवन के अनुभव से गुंथी हैं लेखक की रचनाएं

नई दिल्ली। भारतीय साहित्य में कुछ नाम ऐसे हैं जो शोरगुल से दूर अपनी लेखनी की गहराई से पाठकों के मन पर स्थायी छाप छोड़ देते हैं। उनकी रचनाएं ऐसी होती हैं कि जिन्हें पढ़ने के बाद आप एक क्षण को रुक कर सोचने पर मजबूर हो जाएं। हिंदी साहित्य की दुनिया में संतोष दीक्षित भी एक ऐसे ही लेखक हैं। ऐसे रचनाकार जिनकी लेखनी संवेदना, सरलता और सामाजिकता का सम्मिश्रण होती है। ऐसे लेखक संतोष दीक्षित को उनके उपन्यास 'छाया सच' के लिए सेतु प्रकाशन समूह के वर्ष 2025 के सर्वश्रेष्ठ पांडुलिपि पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

लेखन के क्षेत्र में संतोष दीक्षित के लिए यह पहला अवसर नहीं है जब उन्हें किसी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इससे पहले उन्हें बनारसी प्रसाद भोजपुरी सम्मान से विभूषित किया जा चुका है। उनका जन्म 8 दिसंबर 1958 को बिहार के भागलपुर जिले के लालूचक गांव में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा भागलपुर में हुई। तत्पश्चात उन्होंने पटना और रांची से अपनी पढ़ाई पूरी की। साधारण परिवेश से आने वाले संतोष दीक्षित कम उम्र से ही लेखन करने लगे थे। जीवन के वास्तविक अनुभव, परिवार और समाज, रिश्तों, गांवों, कस्बों आदि की स्थितियों से प्रेरित होकर उन्होंने कई रचनाएं लिखीं।

धीरे–धीरे उनकी लिखी रचनाएं स्थानीय पत्र–पत्रिकाओं में छपने लगीं। साहित्यिक जगत में उनकी पहचान बनने लगी। 90 के दशक के मध्य तक आते–आते उन्होंने कथा लेखन की ओर अपना रुख किया। उनकी रचनाएं देश की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं। उनकी प्रमुख कृतियों में आखेट (1997), शहर में लक्ष्मीनिया (2001), लालस (2004), ईश्वर का जासूस (2008) और धूप में सीधी सड़क (2014) प्रमुख हैं।

लेखक संतोष दीक्षित ने सरल भाषा में बिना किसी अनावश्यक सजावट के लेखन को प्राथमिकता दी। उनकी रचनाओं में भारी हिंदी के शब्दों की जगह आमजन के शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है। उपन्यासकार ने अपनी रचनाओं के जरिए मनुष्य की पीड़ा, परिवारों के भीतर के संबंध, सामाजिक असमानताएं और रोजमर्रा की मनोवैज्ञानिक उलझन को सरलता से सामने रखने का प्रयास किया है। यह कहना बिल्कुल अतिशयोक्ति नहीं होगा कि वह हिंदी साहित्य की दुनिया के एक नायाब सितारा हैं, जिन्होंने न सिर्फ पाठकों के मन को मोहा है अपितु नए युग के लेखकों का भी पथ प्रदर्शन किया है। सेतु प्रकाशन समूह की ओर से दिल्ली में 6 दिसम्बर 2025 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में हुए समारोह में उन्हें वरिष्ठ कथाकार ममता कालिया, कथाकार राजू शर्मा, चर्चित कवियत्री अनामिका और अमिता पाण्डेय ने सम्मानित किया।



कथाकार संतोष दीक्षित को वरिष्ठ लेखिका ममता कालिया, अनामिका, राजू शर्मा और अमिता पाण्डेय ने सेतु पांडुलिपि पुरस्कार से सम्मानित किया।

स्पष्ट और वैध विल से कम हो सकते हैं संपत्ति के विवाद : ऋषभ



पिछले दिनों एडवोकेट ऋषभ चौरसिया रामलाल आनंद महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) के सामुदायिक रेडियो 90.0 एफएम के पॉडकास्ट सीरीज 'रेडियो लॉयर' के मेहमान थे। उनसे राजनीति विज्ञान की तृतीय वर्ष की छात्रा युमना शमीम ने विल और संपत्ति विवाद विषय पर बातचीत की। इसमें उन्होंने विल क्या होती है, कैसे बनती है, विल के प्रकार, गवाहों का महत्व, बदलाव जैसे प्रश्नों का जवाब दिया। उस बातचीत के संपादित अंश 'कैम्पस कनेक्ट' के पाठकों के लिए यहां पेश है...

TARANG 90.0 FM

विल क्या होती है, इसे कब और कैसे बनाया जाता है?

विल एक वैध दस्तावेज है। विल का उद्देश्य यह है कि यदि कोई व्यक्ति अपनी मृत्यु के बाद अपनी प्रॉपर्टी, जिसे चल–अचल संपत्ति कहते हैं, को बांटना चाहता है वह मौखिक हो या फिर लिखित, विल दोनों के माध्यम से बंटवारा कर सकती है। यह न्यायालय में एक वैध दस्तावेज की तरह रखी जा सकती है, जिसे यह निर्णय करने के लिए न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया जा सकता है कि वास्तविक मालिक कौन है और वास्तविक उत्तराधिकारी कौन है।

अगर किसी इंसान की बिना विल बनाए मृत्यु हो जाए तो उस प्रॉपर्टी का क्या होता है, उस प्रॉपर्टी के हकदार कौन लोग होते हैं?

अगर किसी व्यक्ति की बिना विल बनाए मृत्यु हो जाती है तो वह इस पर इंटरस्टेट सक्सेशन हो जाता है। इंटरस्टेट सक्सेशन का मतलब है कि इट इज गवर्न बाय दी कंसर्न पर्सनल लॉ और द कंसर्न लॉ जो उसके रिलीजन को गवर्न करती है। जैसे हिंदुओं के लिए हिंदू सक्सेशन एक्ट, मुस्लिम् के लिए उनके पर्सनल लॉ और अगर कोई क्रिश्चियन है, पारसी है तो इंडियन सक्सेशन एक्ट। इसमें नियम और प्रक्रिया दिए गए हैं कि कैसे किसी ऐसे व्यक्ति की, जिसकी बिना विल बनाए मृत्यु हो गई उसकी चल व अचल संपत्ति उसके पास जाएगी। एक तरह से कानूनी उत्तराधिकारी के पास जाएगी।

रजिस्टर्ड विल और अनरजिस्टर्ड विल में क्या अंतर होता है और न्यायालय किस विल को ज्यादा वैध मानती है?

रजिस्टर्ड और अनरजिस्टर्ड होना, दोनों एक प्रक्रिया है। एक विल जिसे हमने रजिस्टर्ड नहीं कराया हो और एक जिसे हमने रजिस्टर्ड कराया हो। दोनों ही कानून की नजर में बराबर हैं। बराबर कहने का मतलब है कि दोनों वैध दस्तावेज हैं। विल का रजिस्ट्रेशन कराना अनिवार्य नहीं है परंतु रजिस्ट्रेशन करवाने के दो फायदे हैं। पहला आप अपने विल को न्यायालय में जब रखते हैं तो मृत्यु के पश्चात उसके जो लाभार्थी होते हैं या जब हम न्यायालय में उसे साबित करते हैं जिसे हम प्रोबेट कहते हैं तब न्यायालय उसको एक बहुत ही विश्वसनीय प्रमाण के तौर पर मानता है। इसकी मान्यता ज्यादा इसलिए है क्योंकि हमने सरकार के सामने इसमें स्टाम्प ड्यूटी देकर रजिस्ट्रेशन कराया। दूसरा रजिस्टर्ड विल में विवाद होने के अवसर कम होते हैं, क्योंकि रजिस्ट्रार के सामने सारी चीजें रिकॉर्ड हो जाती हैं।

अगर किसी विल को परिवार के सदस्य चैलेंज करते हैं तो न्यायालय उन चैलेंजस को किस आधार पर वैध मानता है?

अगर मुझे यह बताना हो कि विल हमें चैलेंज करना है तो विल चैलेंज करने के लिए हमारे पास मुख्यतः तीन आधार होते हैं। विल जब बनाई गई थी तो जो विल बनाने वाला है उसकी कैपेसिटी नहीं थी। दूसरा इसमें जो हस्ताक्षर किए गए हैं वह धोखे और जालसाजी से या दबाव में किए गए हैं। इसमें शामिल गवाह वैध नहीं हैं या गवाह सही नहीं है। इन तीन आधारों पर हम विल को चैलेंज करते हैं न्यायालय में। इन तीनों आधारों को अगर हम प्रमाणित करते हैं तो विल अवैध घोषित की जा सकती है।

विल बनवाते समय गवाह होना क्या जरूरी होता है?

भारतीय साक्ष्य अधिनियम या पंजीकरण अधिनियम के अनुसार गवाह का प्रयोजन यह होता है कि वह अटेस्टिंग गवाह है, जो विल बनते समय उपस्थित थे। उन्होंने गवाहों या विल बनाने वालों को देखा था। कानून कहता है कि गवाह का होना उसके प्रामाणिक मूल्य को बढ़ा देता है। अनरजिस्टर्ड विल हो तो उसमें गवाह नहीं होते। कोई भी एक दस्तावेज पर आप विल बनाकर दे सकते हैं।

कोई व्यक्ति एक बार विल बना ले और बाद में उस विल में कुछ बदलाव करना चाहे तो वो उस विल में बदलाव कैसे ला सकता है?

विल बनाने के बाद जब तक वह जीवित है वह उसमें बदलाव कर सकता है। वह चाहे एक नई विल बनाए या वह उसी विल के कुछ एक पार्ट को एडिशन के तौर पर कहे, अपने प्रॉपर्टी डिस्ट्रीब्यूशन के लिए वैध दस्तावेज के तौर पर प्रयोग कर सकते हैं।

विल के केस में टेस्टामेंट्री कैपेसिटी का क्या मतलब होता है?

इसका तात्पर्य विल बनाने वाले की क्षमता से है। कुछ बुनियादी शर्तें हैं जो विल को वैध बनाते हैं। पहली बात तो टेस्टेटर वह होता है जो विल बनाता है। अब उसकी क्षमता होनी चाहिए। उसे बालिग होना चाहिए। दूसरा वह मानसिक रूप से स्वस्थ और सक्षम होना चाहिए। साथ ही विल बनाते समय उस पर कोई दबाव या जबरदस्ती नहीं होनी चाहिए।

डिजिटल विल और ऑफलाइन विल में क्या अंतर होता है, किस विल को ज्यादा वैध माना जाता है?

अभी हम एक डिजिटल युग में हैं। कई सारे दस्तावेज आजकल ऑनलाइन ही हैं। विल की जहां तक बात आती है अभी तक कानून में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है जो डिजिटल विल को वैध मानता है। सबसे महत्वपूर्ण इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी एक्ट आईटी एक्ट में कही गई है कि आईटी एक्ट डिजिटल विल पर लागू नहीं होती, परंतु यह अभी चलन में है कि लोग अपनी विल बनाकर इसे संग्रहीत कर रहे हैं। इसे ऑनलाइन रख रहे हैं। जिसे हम कोडिकल या कोडसिल कहते हैं। टेस्टेटर यानी जो विल बनाने वाला है वह अपनी इच्छा से उसे कर रहा है या वह नई विल को लाता है तो पुरानी विल को वह खारिज कर देता है।

सर, क्या विल की एक्सपायरी डेट होती है?

विल की कोई एक्सपायरी डेट नहीं होती है। उसकी ओर से बनवाई गई विल उसके जिंदा रहने तक मान्य होती है। वह आजीवन उस विल में बदलाव कर सकता है। उसकी मृत्यु के बाद उसकी हिज लास्ट स्टेटमेंट यथावत बनी रहती है। उनके जो भी वारिसदार हैं। कानूनी उत्तराधिकारी हैं वह उस विल को न्यायालय में या जहां तक न्यायालय की बात आती है न्यायालय कुछ अनिवार्य तत्वों को देखता है। विल में हस्ताक्षर करने वाले जो गवाह हैं, वह कम से कम दो होने चाहिए। उन गवाहों की जानकारी में सारी चीजें होनी चाहिए। विल अपनी स्वेच्छा से और बिना किसी दबाव के बनाई गई हो। टेस्टेटर के हस्ताक्षर होने चाहिए। आज की तारीख में न्यायालय ऑफलाइन विल को ही वैध मानता है। डिजिटल विल में अभी भी कई सारी अनिश्चितताएं बनी हुई हैं, जो समयानुसार कानून बनाने वाले जानकार देखेंगे।

सर, आप हमारे श्रोताओं को कुछ ऐसा बताना चाहेंगे कि विल बनाते हुए वह किन चीजों का ध्यान रखें कि भविष्य में उनके परिवारीजनों को किसी तरह की दिक्कत न हो।

इस सवाल को मैं अगर समझ कर आपके श्रोताओं को बताना चाहूं तो इसके मुख्य रूप से दो पहलू हैं। पहला वह विल को किस नजरिए से देखते हैं। दूसरा विल बनाने से क्या फायदा और किसका फायदा होता है, यह देखना होता है। पहला विल को वह इस तरीके से न देखें कि वह अपने किसी परिवार वाले को या किसी वारिस को अपने किसी हिस्से से जायदाद से अलग कर रहे हैं। इस तरह इसे वैध दस्तावेज की तरह देखें। वरासत वाली प्रॉपर्टी की स्पष्टता उसमें आ जाती है। इसे हम कहते हैं स्टेट प्लानिंग। यह पूरी तरह से राज्य स्तर की योजना है। मतलब कि हमारी इतनी चल अचल संपत्ति है। हम इसका बंटवारा करने जा रहे हैं। इसे कितने भाग में किसको देने जा रहे हैं। अब इसका फायदा किसे होता है? इसका फायदा जीते जी और जीने के बाद दो लोगों को है। जो विल बना रहे हैं, वह एक स्पष्टता रखते हैं कि उनकी संपत्ति किन लोगों के पास जाएगी? किस तरीके से जाएगी। कोई विवाद नहीं होता है। दूसरी बात विल करने वालों की मृत्युं के बाद उनके जो वारिसदार हैं, उनके लिए काफी आसान हो जाता है कि वह न्यायालय के किसी मसले में नहीं पड़ते। प्रॉपर्टी के जितने हिस्से होते हैं। उनके पास एक स्पष्ट पिक्चर होती है और आपस में एक अच्छी बॉन्डिंग रहती है। उन्हें पता होता है कि हमें क्या मिला है, कैसे मिला है और कब मिलने वाला है। हमारे हिस्से की संपत्ति एक तरह से स्पष्ट हो जाती है। बैंक एफडी हो या प्रॉपर्टी, उनकी एक टाइटल क्लियर हो जाती है। आज के समय में देश में जो भी मसले हैं उसमें संपत्ति विवाद के अधिक हैं। उनमें लोगों के पास यह स्पष्टता नहीं होती कि यह जो संपत्ति है। जमीन है। इसका हिस्सेदार, वा. रिसदार अथवा इसका मालिक कौन है? इस तरह जब मालिकाना हक तय हो जाता है तो संपत्ति हमारे पास ट्रांसफर करने के लिए उसका इस्तेमाल करने के लिए वैध शक्तियां आ जाती हैं। हम फालतू मुकदमेबाजी से बचते हैं। साथ ही हमारा समय बचता है और परिवारीजनों में एक तरह की सामाजिक सद्भावना बनी रहती है।

सिनेमा ने दिया सामाजिक बदलाव का संदेश

रामलाल आनंद महाविद्यालय की कई समितियों ने विद्यार्थियों के लिए कराई फिल्मों की स्क्रीनिंग



भारत

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय में सामाजिक सच्चाइयों को प्रदर्शित करने के लिए महाविद्यालय की समिति अंबेडकर स्टडी सर्कल ने 'जय भीम' फिल्म की स्क्रीनिंग का महाविद्यालय में 13 अक्टूबर 2025 को आयोजन किया। यह फिल्म 2021 में टी.जे. ज्ञानवेल के निर्देशन में बनी एक आदिवासी समुदाय की महिला सेंगिनी पर आधारित है। फिल्म में एक पत्नी अपने पति की गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराती है, जो पुलिस कस्टडी में था। एडवोकेट चंद्रू एक न्यायविद है। वह सेंगिनी की मदद करने आगे आता है और पुलिस के खिलाफ लड़ाई लड़ता है। फिल्म में एडवोकेट चंद्रू की भूमिका तमिल फिल्म इंडस्ट्री के जाने माने अभिनेता सूर्या और सेंगिनी की भूमिका लिजो मोल जोस ने निभाई है। इस दौरान समिति के संयोजक गंधर्व कौशिय ने कहा कि जय भीम जैसी फिल्में मनोरंजन के लिए नहीं होतीं बल्कि यह हमें अन्याय और सामाजिक सच्चाइयों से अवगत कराती हैं। फिल्म हमें सोचने पर मजबूर करती है ताकि हम समाज में समानता और न्याय स्थापित करने की दिशा में कदम बढ़ा सकें। कार्यक्रम के अंत में विद्यार्थियों को डॉ भीमराव अंबेडकर के विचारों से भी अवगत कराया गया। इस मौके पर समिति के सह–संयोजक डॉ. विकास कुमार सहित कई अन्य शिक्षक, समिति के पदाधिकारीं, सदस्य और विभिन्न विभागों के विद्यार्थी मौजूद रहे।

सांस्कृतिक पहचान की चुनौतियां को दिखाया

दीपक/नई दिल्ली। नॉर्थ ईस्ट स्टूडेंट्स वेलफेयर सोसाइटी ने 15 अक्टूबर 2025 को रामलाल आनंद महाविद्यालय में फिल्म एक्सोन : ए रेसिपी फॉर डिजास्टर की स्क्रीनिंग की। एक्सोन कॉमेडी ड्रामा फिल्म है, जो निकोलस खार्कोंगोर द्वारा निर्देशित है। यह फिल्म पूर्वोत्तर भारतीय प्रवासियों पर आधारित है, जो दिल्ली में नस्लवाद, सांस्कृतिक पहचान की चुनौतियों का सामना करते हैं। फिल्म में सांस्कृतिक पहचान और मानवता जैसे विषयों को दर्शाया गया। इस मौके पर सोसाइटी की संयोजिका सुश्री मीनाक्षी ब्रह्मा सहित कई अन्य शिक्षक और विद्यार्थी मौजूद रहे।

दलित महिलाओं की फोन के जरिए पत्रकारिता

श्रेया/नई दिल्ली। रिंटू थॉमस एवं सुष्मित घोष निर्देशित डॉक्यूमेंट्री राइटिंग विद फायर की रामलाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग ने 7 अक्टूबर 2025 को स्क्रीनिंग की। डॉक्यूमेंट्री में उत्तर प्रदेश की दलित महिलाओं ने किस तरह स्मार्ट फोन के जरिए पत्रकारिता की, उसे दिखाया गया। हिंदी पत्रकारिता के संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने कहा कि मजबूत इरादों से कोई भी महिला समाज में बदलाव ला सकती है। इसी कड़ी में विद्यार्थियों ने प्रश्न भी पूछे, जिसके प्रो. राकेश कुमार, डॉ. निशा सिंह व डॉ. श्वेता आर्य ने उत्तर दिए।

फिल्म ने रामानुजन के योगदान को दिखाया

शिवम कुमार/नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय की मैथमेटिक सोसायटी इनफिनिटी ने 10 अक्टूबर 2025 को फिल्म स्क्रीनिंग का आयोजन किया। फिल्म–द मैन हू न्यू इनफिनिटी महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन के जीवन पर आधारित है। फिल्म रामानुजन के गणित में उनके योगदान, विश्लेषण, उनके व हार्डी के बीच दोस्ती को दिखाती है। जहां उन्होंने ब्रिटिश गणितज्ञ जी. एच. हार्डी के साथ काम किया था। फिल्म रामानुजन के कैम्ब्रिज विवि में बिताए गए समय, उनके जीवन की कठिनाई, प्रतिभा और दोस्ती को रेखांकित करती है।

आउट ऑफ माइंड फिल्म की स्क्रीनिंग

स्वीटी कुमारी/नई दिल्ली। आउट ऑफ माइंड फिल्म के माध्यम से विद्यार्थियों को सीख मिलती है कि किसी व्यक्ति के लिए उसकी आवाज कितनी महत्वपूर्ण होती है। यह बात रामलाल आनंद महाविद्यालय में 6 अक्टूबर 2025 को आयोजित सुगम समिति की फिल्म स्क्रीनिंग आउट ऑफ माइंड के दौरान रितिका ने कही। फिल्म स्क्रीनिंग का महत्व विशेष रूप से सक्षम विद्यार्थियों को संघर्ष, धैर्य, समान अवसर का अधिकार और सामाजिक सरोकारों के महत्व से जोड़ना है। इस दौरान समिति की उपाध्यक्ष परी तोमर सहित कई सदस्य व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

टेरेक्स की क्विज में अदिति सिंह प्रथम

अंकेश स्वर्ण

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय के भूविज्ञान विभाग की टेरेक्स समिति ने 6 अक्टूबर 2025 को क्विज प्रतियोगिता आयोजित की। प्रतियोगिता को तीन चरण में बांटा गया। प्रथम चरण में 25 बहुविकल्पीय प्रश्नों में सबसे ज्यादा स्कोर कर 10 विद्यार्थियों को दूसरे चरण में जाने का अवसर मिला। द्वितीय चरण में लघु प्रश्न और उत्तर राउंड हुआ, जिसमें प्रथम और द्वितीय स्थान प्राप्त कर प्रतिभागी तीसरे चरण में पहुंचे। प्रतियोगिता के अंतिम चरण में दोनों प्रतिभागी समान स्कोर कर टाई ब्रेकर राउंड में पहुंच गए।

टाई ब्रेकर राउंड में 10 प्रश्नों में सबसे ज्यादा स्कोर करते हुए अदिति सिंह ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान पर हर्ष प्रियदर्शी रहे। तीसरे स्थान पर निधि शर्मा रहीं। विजेता प्रतिभागियों को संयोजिका सुश्री पूजा यादव ने प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। इस दौरान टेरेक्स के अध्यक्ष अर्पित शुक्ला, सुश्री श्वेता राय एवं प्रतिभागी उपस्थित रहे।

कला और साहित्य के संबंधों का अनुभव करिए

आस्था त्रिपाठी

नई दिल्ली। अंग्रेजी साहित्यिक समिति यूबिक्विटस ने आधुनिकता की प्रतिध्वनियां, साहित्य और दृश्य कला में संवाद विषयक कार्यशाला का आयोजन 10 अक्टूबर 2025 को राम लाल आनंद महाविद्यालय में किया। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. बी.आर. अंबेडकर कॉलेज की सहायक प्राध्यापक डॉ. अंतरा भाटिया रहीं।

डॉ. अंतरा भाटिया ने दृश्य कला के जरिए विद्यार्थियों को समझाया कि कला और साहित्य के गहरे संबंध का अनुभव करने से लेखनी बेहतर होगी। कला और साहित्य की संस्कृति के बारे में आप जान सकेंगे। इससे आप विद्यार्थियों के ज्ञान में इजाफा होगा। उन्होंने कहा कि आधुनिकता केवल एक कला शैली नहीं बल्कि सोचने और अभिव्यक्ति का एक नया दृष्टिकोण है। अपने व्याख्यान में डॉ. अंतरा भाटिया ने आधुनिकतावाद और यथार्थवाद के बीच के प्रमुख अंतरों पर प्रकाश डाला। इंटरेक्टिव सत्र के दौरान प्रतिभागियों के लिए एक कलात्मक गतिविधि रखी गई, जिसमें समिति की ओर से सभी प्रतिभागियों को रंग और शीट्स वितरित किए गए, जिन पर विद्यार्थियों ने अपने विचारों को कला के रूप में व्यक्त किया।

कार्यक्रम के अंत में सोसाइटी की अध्यक्ष महक गोयल ने बताया कि कार्यशाला में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को ई–सर्टिफिकेट प्रदान किए जाएंगे। इसी के साथ दो सर्वश्रेष्ठ कलाकृतियों को विशेष प्रशंसा प्रमाण पत्र दिए गए। आयोजन का समापन करते हुए अतिथि और उपस्थित लोगों का धन्यवाद दिया गया। इस अवसर पर सोसाइटी की संयोजिका सुश्री मीनाक्षी ब्रह्मा, डॉ. दीपशिखा सहित अनेक विद्यार्थी मौजूद रहे।

स्वच्छ महाविद्यालय की मुहिम

राम पाण्डेय

नई दिल्ली। स्वच्छता एवं स्वास्थ्य समिति सुचिता ने स्वच्छ महाविद्यालय अभियान के तहत 15 अक्टूबर 2025 को राम लाल आनंद महाविद्यालय में स्वच्छ महाविद्यालय की मुहिम चलई। इसकी शुरुआत महाविद्यालय के फ्रंट स्टेज से हुई, जिसके बाद सोसाइटी के सदस्यों ने कक्षाओं में जाकर विद्यार्थियों से महाविद्यालय को साफ–सुथरा रखने और गंदगी न फैलाने की बात कही।

विद्यार्थियों को सूचित किया कि अगर कोई विद्यार्थी गंदगी फैलाता है तो उसे 50 रुपए का दंड भुगतना पड़ेगा। गलती दोबारा दोहराने पर दोगुना दंड भुगतना होगा। इस मौके पर कई विद्यार्थियों ने अच्छे सुझाव भी दिए। स्वच्छ रहो, स्वस्थ रहो जैसे नारे भी लगे। संचालन समिति के अध्यक्ष आदर्श सिंह ने किया। इस अभियान में समिति की संयोजिका डॉ. ऋतम्भरा मिश्र सहित अनेक विद्यार्थी मौजूद रहे।

जो रहेगा स्वस्थ, वही रहेगा मस्त

स्नेहा झा

नई दिल्ली। राजीव गांधी कैंसर संस्थान एवं अनुसंधान केंद्र के सहयोग से महिला कल्याण सलाहकार समिति ने कैंसर की रोकथाम और शीघ्र पहचान पर राम लाल आनंद महाविद्यालय में 13 अक्टूबर 2025 को जागरूकता सत्र आयोजित किया। इस सत्र के मुख्य वक्ता कंसल्टेंट सर्जिकल ऑन्कोलॉजिस्ट डॉ. नवीन कुमार कुशवाहा रहे। उन्होंने वर्तमान समय में महिलाओं के बीच बढ़ते कैंसर को लेकर बात की। साथ ही ब्रेस्ट कैंसर, सर्वाइकल कैंसर, मुख कैंसर के कारणों, लक्षणों और रोकथाम के उपायों पर प्रकाश डाला।

उन्होंने बताया कि कैंसर की प्रारंभिक अवस्था में पहचान कर ली जाए तो उपचार आसान और सफल हो सकता है। कैंसर से बचने का सही उपाय सेब का नियमित रूप से सेवन करना है। उन्होंने कहा कि जो रहेगा स्वस्थ, वहीं रहेगा मस्त। इस दौरान स्क्रीनिंग कैंप का भी आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों के शरीर की प्रारंभिक जांच की गई। इसके अतिरिक्त स्वस्थ जीवनशैली अपनाने, तंबाकू सेवन से बचने, दूसरे नशीले पदार्थों से बचने सहित नियमित स्वास्थ्य परीक्षण करवाने पर भी बल दिया गया।



चिकित्सा शिविर में शिक्षकों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों ने कराई जांच।

समारोह में डॉ. हरलीन गोयल को सम्मानित अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया, जहां सह संयोजिका डॉ. शालिनी ने उन्हें सम्मान स्वरूप उपहार प्रदान किया। मंच संचालन निहारिका और तृप्ति ने किया। कार्यक्रम के समापन पर महिला कल्याण समिति की ओर से उपस्थित सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया गया।

इस मौके पर डॉ. सरवरी नाग, डॉ. शची मीणा, डॉ. अनुभा, मिस्टर राजेंद्र सिंह, डॉ. नरेंद्र कुमार, मिस साक्षी, प्रो. रेशमा दिलावर, आईक्यूएसी समन्वयक एवं उपप्राचार्य प्रो. प्रेरणा दीवान, संयोजक एम सलोमी जॉन, सलाहकार डॉ. सुधा चौधरी सहित कई शिक्षक और बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

एआई उपयोग के लिए बनाएं पॉलिसी

अंकिता भारती

नई दिल्ली। आधुनिक युग में आर्टीफीशियल इंटेलीजेंस का महत्व बढ़ता जा रहा है। यह जीवन के हर पल को प्रभावित कर रहा है। शोध की प्रक्रिया में अपनी भूमिका निभा रहा है। यह बात जामिया मिल्लिया विश्वविद्यालय के कंप्यूटर साइंस विभाग के प्रो. मनसफ आलम ने रामलाल आनंद महाविद्यालय में 1 अक्टूबर 2025 को द मैनेजमेंट समिति मार्ग की कार्यशाला में कही। शोध के क्षेत्र में एआई के नैतिक उपयोग विषयक कार्यशाला में प्रो. मनसफ आलम ने बताया कि सभी संस्थानों को एआई के उपयोग के लिए एक प्राइवेसी पॉलिसी बनानी चाहिए। कॉपीराइट के विषय में कहते हैं कि कोई व्यक्ति किसी प्लेटफार्म के कंटेंट का इस्तेमाल करता है तो उस संस्थान से अनुमति लेना अनिवार्य होता है। कोई व्यक्ति किसी संस्था, संपादक या लेखक से कंटेंट लेता है तो तुरंत प्रभाव से उसका श्रेय संस्थान को देना चाहिए। एआई को नैतिकता के सिद्धांत, डाटा सुरक्षा, पारदर्शिता, निष्पक्षता, जवाबदेही, स्पष्टता के तहत कार्य करना चाहिए, जिससे यह मानव जीवन और समाज के लिए बेहतर तकनीक बन सके। कोई व्यक्ति गलत तरीके से एआई का प्रयोग या गोपनीय नीति का पालन न करे तो उसे यूजीसी के दिशा–निर्देश के तहत सजा दी जाए। उन्होंने बताया वर्तमान युग में आर्टीफीशियल इंटेलीजेंस से भी ऊपर सिंथेटिक इंटेलीजेंस उपयोग में आ गया है। यह मनुष्य के व्यवहार के अनुसार ही कार्य करता है। इस दौरान समिति की संयोजिका डॉ. दीप्ति गुप्ता सहित कई अन्य शिक्षक समिति के विद्यार्थी उपस्थित रहे।



मार्ग समिति की ओर से एआई पर आयोजित कार्यशाला में अतिथि वक्ता के साथ शिक्षक और विद्यार्थी।

लोगो स्पर्धा में गौरव पहले और लव दूसरे स्थान पर

खुशबू

- डिजिटल पोस्टर मेकिंग में प्रतिभागियों ने लिया भाग
- साइबर सिक्योरिटी भविष्य के लिए है आवश्यक

नई दिल्ली। साइबर सिक्योरिटी भविष्य के लिए अत्यंत आवश्यक है। हमें डिजिटल माध्यमों पर निर्भर न रहकर साइबर धोखाधड़ी की ओर जागरूक होना चाहिए। यह बात 9 अक्टूबर 2025 को राम लाल आनंद महाविद्यालय में आयोजित साइबर सुरक्षा और फोरेंसिक केंद्र की ओर से आयोजित डिजिटल पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में शिक्षिका दीक्षा सपरा ने कही।

प्रतियोगिता में सभी प्रतिभागियों को साइबर सिक्योरिटी और साइबर अवेयरनेस विषय पर पोस्टर और लोगो तैयार करने के निर्देश दिए गए। विद्यार्थियों ने कंप्यूटर पर रचनात्मक ढंग से डिजिटल लोगो तैयार किए। इनमें साइबर सुरक्षा और जागरूकता का संदेश देने का प्रयास किया। इस प्रतियोगिता में अनेक विद्यार्थियों ने भाग लिया।

इसमें अपने हुनर का इस्तेमाल कर प्रथम स्थान पर गौरव रहे। द्वितीय स्थान पर लव सेनी और तृतीय स्थान पर शिवम कुशवाहा रहे। विजेताओं को पुरस्कार और प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। इस मौके पर शिक्षिका सुश्री मनीषा वाधवा और सुश्री साक्षी शर्मा सहित अनेक प्रतिभागी मौजूद रहे। इसके साथ ही कई विद्यार्थियों ने भी हिस्सा लिया।

आपके सपनों को पंख देते हैं नए विचार

उद्यमिता एक प्रेरणादायक अभ्यास है : नितिन, सत्यापित विचार आने से बनेगी बात : अनुराग

तबा आका



ईसेल की ओर से आयोजित वक्ता सत्र में अतिथियों के साथ शिक्षक और समिति के पदाधिकारी।

नई दिल्ली। उद्यमिता एक प्रकार का सामान्य प्रबंधन और कौशल विकास है। उद्यमिता केवल व्यवसाय शुरू करने तक सीमित नहीं है। यह एक प्रेरणादायक अभ्यास है। नए लोगों से मिलना, व्यवसाय शुरू करने की प्रेरणा पर चर्चा करना और आत्मविश्वास के साथ अपना नाम, विचार और उद्देश्य प्रस्तुत करना शामिल है। यह बात रामलाल आनंद महाविद्यालय में ईसेल के लॉन्च पैड स्पीकर सेशन में 7 अक्टूबर 2025 को नितीन के. ने कही। नितीन के. ने पीपीटी के माध्यम से उद्यमिता की प्रक्रिया और विचार से लेकर क्रियान्वयन तक की बात विद्यार्थियों से साझा की।

वक्ता प्रहर्ष अनुराग ने कहा कि स्टार्टअप्स का कब्रिस्तान उन शानदार पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों से भरा है, जो कभी ग्राहकों तक नहीं पहुंच पातीं। उद्यमी ही असली क्षमता और व्यक्तित्व के प्रतीक होते हैं। उद्यमिता में सफलता पाने के लिए हमेशा ऐसे विचार के साथ आगे आएं जो पहले से सत्यापित हों, बिना सत्यापन वाले विचार ज्यादातर असफल हो जाते हैं। प्रहर्ष अनुराग ने कहा वह स्वयं एक प्रारंभिक चरण के स्टार्टअप के संस्थापक हैं। लॉन्च पैड एक ऐसा अवसर है जहां विद्यार्थी उद्यमिता को खोजने और अनुभव करने का मौका प्राप्त करता है। उसी अनुभव से वह सीखते हैं और उसका लाभ उठाते हैं।

ईसेल की संयोजिका रियांका जैन ने कहा कि नवाचारपूर्ण विचार आपके सपनों को पंख देते हैं। लॉन्च पैड स्पीकर सेशन विद्यार्थियों को प्रेरणा बढ़ाने और महत्वपूर्ण उद्योग संबंधी जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से आयोजित हुआ। रियांका जैन ने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि आप सभी सक्रिय रूप से भाग लें और अपने भीतर छिपी हुई उद्यमी भावना को पहचानें और उसे आगे लेकर आएं। लॉन्च पैड स्पीकर सेशन में पिचिंग प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इसमें शामिल विद्यार्थियों ने उत्साह के साथ भाग लिया। प्रथम स्थान पर आए शशांक को 1500 रुपए की राशि, द्वितीय स्थान पर रोशनी झा को एक हजार रुपए की राशि और तृतीय स्थान पर रोहित बक्शी को 750 रुपए की राशि एवं प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। इस दौरान ईसेल की सह संयोजिका डॉ. सोनल गुप्ता, ईसेल के सदस्य और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

आज नौकरियों में अवसर प्रदान कर रहा है एआई

अंशु यादव

- डाटा साइंस से लेकर मशीन लर्निंग के क्षेत्र में नौकरियां बढ़ीं
- समस्याओं को हल करने के लिए डाटा एक वैज्ञानिक अध्ययन

नई दिल्ली। आज के दौर में आर्टीफीशियल इंटेलीजेंस सिर्फ मनुष्य के कार्यों को नहीं छीन रहा बल्कि नए अवसर भी प्रदान कर रहा है। जिस कारण से डाटा एनालिटिक्स, डाटा साइंस से लेकर मशीन लर्निंग के क्षेत्र में नौकरियां बढ़ी हैं। यह बात 14 अक्टूबर 2025 को रामलाल आनंद महाविद्यालय के पाथवे करियर काउंसिलिंग प्लेसमेंट सेल की ओर से आयोजित एआई एंड मशीन लर्निंग सेमिनार के दौरान मुख्य वक्ता रोहित पाहवा ने कही। उन्होंने एआई का परिचय देते हुए कहा कि डाटा एनालिटिक्स कच्चे डाटा को साफ करने, विश्लेषण करने और व्यवस्थित करने की एक प्रक्रिया है। इससे रुझानों, पैटर्न और अंतर्दृष्टि को उजागर किया जा सके, जो बेहतर निर्णय लेने और भविष्यवाणियां करने में मदद करता है।

डाटा साइंस, डाटा से ज्ञान प्राप्त करने और समस्याओं को हल करने के लिए डाटा का वैज्ञानिक अध्ययन है। मशीन लर्निंग कृत्रिम बुद्धिमत्ता का एक क्षेत्र है, जिसमें कंप्यूटर सिस्टम को बिना स्पष्ट रूप से प्रोग्राम किए डाटा से खुद सीखने और सुधारने के लिए सक्षम बनाया जाता है। उन्होंने उदाहरण पेश करते हुए पाइथन को इस्तेमाल करना बताया। एआई, मशीन लर्निंग और डीप लर्निंग के विभिन्न उत्पादन क्षेत्रों के बारे में बात की। मौसम का डाटा, उपयोगकर्ता का डाटा, बैंकिंग व वित्त, स्वास्थ्य, रियल एस्टेट, चेहरा पहचान प्रणाली इत्यादि की जानकारी दी। सेमिनार के संयोजक डॉ पवन कुमार और सह संयोजिका शिक्षिका सृजना सिंह रहीं।

विद्यार्थियों ने तर्कशक्ति प्रतिभा का प्रदर्शन किया

समर्थ

- वाद–विवाद समिति ने पॉलिटिकल पार्टीज मीट का आयोजन किया
- आयुष प्रथम, फातिमा द्वितीय और प्रकृति शर्मा को तृतीय स्थान मिला

नई दिल्ली। राजनीतिक विमर्श और नेतृत्व कौशल को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से 14 अक्टूबर 2025 को रामलाल आनंद महाविद्यालय में आरोह हिंदी वाद–विवाद समिति ने ऑल इंडिया पॉलिटिकल पार्टीज मीट का आयोजन किया, जिसमें विद्यार्थियों ने विभिन्न राजनीतिक दलों की भूमिका निभाते हुए नीति, विचार और संविधान से जुड़े मुद्दों पर बहस की।

एंकर दिलाशा ने विद्यार्थियों को ऑल इंडिया पॉलिटिकल पार्टीज मीट के उद्देश्य और स्वरूप का परिचय दिया। साथ ही चेयरपर्सन पुरषोत्तम, उप चेयरपर्सन शिवम कुशवाहा और एज रिषु श्रीवास्तव का परिचय कराया। चेयरपर्सन पुरषोत्तम ने सभी प्रतिभागियों को एआईपीपीएम के नियम और प्रक्रिया की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि प्रत्येक प्रतिभागी को 90 सेकेंड का भाषण देना होगा, जहां वह व्यवस्था को देख रहे लोगों से प्रश्न पूछ सकते हैं, चाहे वह नोट्स के रूप में हो अथवा मौखिक रूप में।

पूरे कार्यक्रम को दो सत्रों में विभाजित किया गया–सार्वजनिक सत्र और गोपनीय सत्र, जिसके बाद सिफारिश सत्र रखा गया। डिबेट में विद्यार्थियों ने अपनी अनुसंधान क्षमता, तर्कशक्ति और प्रश्न कौशल का प्रदर्शन किया। विजेताओं में पहला स्थान आयुष, दूसरा स्थान फातिमा और तीसरा स्थान प्राप्त किया प्रकृति शर्मा ने। इन सभी विजेताओं को अध्यक्ष सक्षम, उपाध्यक्ष युमना समीम और आरोह समिति की पूर्व अध्यक्ष खुशी वशिष्ठ ने पदक पहना कर सम्मानित किया। अध्यक्ष सक्षम ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए चेयरपर्सन, निर्णायक और प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया।

अभिषेक और करमंद की जोड़ी चमकी

खुशबू

नई दिल्ली। इंटरनेट ब्रेनरोट फ्रेशर्स क्विज नाम से रामलाल आनंद महाविद्यालय की क्विज सोसायटी कुरु का 13 अक्टूबर 2025 को फ्रेशर्स के लिए क्विज का आयोजन किया गया। समिति के समन्वयक बसंत मिश्र, सह–समन्वयक राजीव वशिष्ठ ने अलग–अलग महाविद्यालयों से आए प्रतियोगियों को प्रोत्साहित किया। प्रतियोगिता में प्रतियोगियों के दो–दो के ग्रुप बनाए गए।

सोसाइटी के अध्यक्ष सैयद साहिल ने प्रश्न पूछे, जिसका उत्तर प्रतियोगियों को दिए गए कागज पर लिखना था। सभी प्रतियोगियों ने उत्साह के साथ इसमें हिस्सा लिया। अंत में परिणाम घोषित किए गए। पहला स्थान भगत सिंह महाविद्यालय के अभिषेक और करमंद ठाकुर ने, दूसरे स्थान पर रामलाल आनंद महाविद्यालय की त्रिशा और ऐश्वर्या रहीं। इसी कड़ी में तीसरा स्थान जीसस एंड मैरी कॉलेज की मानवी और सुनिधि ने हासिल किया। सभी विजेताओं को बसंत मिश्र और राजीव वशिष्ठ ने पुरस्कृत किया।

कैम्पस कनेक्ट के नवंबर अंक का विमोचन करते हुए प्राचार्य ने कहा–

विद्यार्थियों को स्किल्स पर ध्यान देना चाहिए



कैम्पस संवाददाता

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय के ई–न्यूज लेटर 'कैम्पस कनेक्ट' के नवंबर अंक का विमोचन 18 दिसंबर 2025 को हुआ। विमोचन के दौरान प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने अंक की संपादक खुशी प्रजापति और उप–संपादक अंकेश स्वर्ण को बधाई देते हुए कहा कि पत्रकारिता जगत में स्किल्स का होना जरूरी है। सही मायने में एक पत्रकार तभी अच्छा पत्रकार कहा जाता है, जब उसके पास अपनी क्षेत्र की काबिलियत हो।

प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने विद्यार्थियों के बारे में प्रश्न किया कि पत्रकारिता विभाग में ऐसे कितने विद्यार्थी हैं जो पत्रकारिता के क्षेत्र में जाना चाहते हैं, जो विद्यार्थी इस क्षेत्र में जाना चाहते हैं वह अपने कौशल को किस प्रकार निखार रहे हैं? प्राचार्य के इस प्रश्न का उत्तर देते हुए हिंदी पत्रकारिता के संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने बताया कि अधिकांश विद्यार्थी पत्रकारिता में जाना चाहते हैं। कुछ विद्यार्थी प्रतियोगी परीक्षा देना चाहते हैं। वह स्किल्स पर फोकस करने की जगह पढ़ने में अधिक रुचि दिखाते हैं। पत्रकारिता में रुचि रखने वाले विद्यार्थी स्किल्स पर फोकस करते हैं। इसी कड़ी में प्राचार्य ने अंक से जुड़े दोनों विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हुए अपने कौशल को इसी तरह निखारने की बात कही।

जेजे कॉलोनी में बांटी गई सामग्री

शिवानी

नई दिल्ली। दीवाली के उपलक्ष्य में राम लाल आनंद महाविद्यालय में जरूरतमंदों की सहायता के लिए 13 से 16 अक्टूबर 2025 तक एक सहायता अभियान चलाया गया। इसके तहत महाविद्यालय परिसर में दान इकट्ठा करने की प्रक्रिया शुरु हुई, जिसमें विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने जरूरत की वस्तुओं को एकत्रित किया। तत्पश्चात आनंद निकेतन के जेजे कॉलोनी में विद्यार्थियों ने अभियान चलाकर सामग्री जरूरतमंद लोगों में दी। इस दौरान एनएसएस के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. अनुराग शर्मा सहित एनएनएस के सदस्य उपस्थित रहे।

कलाकृति में दिखी दीवाली की रंगीन झलक

श्रुति मिश्रा

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय के कला प्रेमियों के लिए 17 अक्टूबर 2025 का दिन खास रहा। महाविद्यालय की फाइन आर्ट्स सोसाइटी इनारा ने दीवाली के उपलक्ष्य में कलाकृति 3.0 का आयोजन किया। इसका उद्देश्य था भारतीय संस्कृति, परंपरा और त्योहारों की महत्ता को कला के माध्यम से प्रस्तुत करना। परिसर में उत्सव जैसा माहौल दिखा। इसमें विद्यार्थियों और शिक्षकों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। रचनात्मक हुनर का प्रदर्शन किया। छात्र–छात्राओं और शिक्षकों के लिए खुली गतिविधियों में प्रतिभागियों ने रंगों से दीयों को सजाकर कला और परंपरा का सुंदर संगम प्रस्तुत किया। हर दीया एक नई कहानी कहता प्रतीत हुआ। यह प्रतियोगिता नहीं थी, जिसके कारण सभी इस गतिविधि में खुलकर शामिल हुए। हार जीत की भावना से परे हट कर एक दूसरे के साथ त्योहार के महत्व को बढ़ावा दिया। समिति के बच्चों ने मेहंदी की डिजाइन से सभी का ध्यान आकर्षित किया। छात्र, छात्राओं और शिक्षकों के हाथों पर दीवाली से जुड़े प्रतीक चिन्हों की झलक देखने को मिली। समिति की संयोजिका प्रो. मुक्ता दत्ता मजूमदार ने कहा कि दीवाली केवल रोशनी का पर्व नहीं बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक विरासत और कलात्मकता का भी उत्सव है। हमें गर्व के साथ भारतीय परंपराओं को अपनाना और आगे बढ़ाना चाहिए। उन्होंने कला के जरिए संस्कृति के प्रचार–प्रसार की आवश्यकता पर बल दिया। विद्यार्थियों को भविष्य में भी इसी तरह से भारतीय त्योहारों को रचनात्मक तरीके से मनाने के लिए प्रेरित किया।



संरक्षक मंडल

प्राचार्य

प्रो. राकेश कुमार गुप्ता

विभागाध्यक्ष

प्रो. राकेश कुमार

परामर्शदाता

डॉ. अटल तिवारी

संपादक

अंकेश स्वर्ण

उपसंपादक

आशीष राणा